>

Title : Need to formulate a plan for the welfare of mentally retarded children in the country.

श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं एक सामाजिक विषय पर बोलने के लिये खड़ा हुआ हूं। देश के मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिये सरकार अपनी जवाबदेही मानकर ऐसे बच्चों को कोई आर्थिक सहायता या जीवन-यापन के लिए कुछ मदद करे। हमारे देश में हर गांव में मानसिक रूप से विकलांग बच्चे पैदा होते हैं। पैदा होने से पहले उनकी गर्भ में जांच हो, ऐसा मैडिकल साइंस आज तक नहीं आया है। इसलिये जब ऐसे बच्चे पैदा होते हैं तो उस गरीब परिवार पर आर्थिक बोझ आ जाता है या किसी मध्यम वर्ग परिवार में ऐसा बच्चा पैदा होता है तो उसका परिवार डिस्टर्ब हो जाता है। गम्भीर बीमारी के कारण उस परिवार पर आर्थिक चोट भी लगती है। मैं आपके माध्यम से सरकार से विनती करना चाहता हूं कि मानसिक रूप से जो विकलांग बच्चे पैदा होते हैं, उनके लिये सरकार कुछ ऐसी योजना बनाये, नीति बनाये ताकि उनका आर्थिक बोझ सरकार वहन करे। ऐसे परिजनों को बच्चे के लिये 1000 रुपया प्रतिमास आर्थिक सहायता के रूप में दे। ऐसा नहीं कि एक परिवार में केवल एक ही बच्चा पैदा होता है, किसी परिवार में एक से भी ज्यादा बच्चे पैदा होते हैं। परिवार त्रस्त होने की वजह से कई बार बच्चों को सड़क पर डाल देते हैं या मन्दिरों में छोड़ देते हैं। ऐसे बच्चों को एकत्र करके कुछ संस्थायें यें काम चलाती हैं और उनका पालन-पोषण करती हैं।

अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से एक ऐसी संस्था का उल्लेख करना चाहूंगा। महाराष्ट्र में अमरावती में एक शंकरा पापडकर महाराज संस्था चलाते हैं। उन्होंने 150 बच्चे एकत्र करके उस संस्था में पढ़ाते हैं और चलना भी सिखाते हैं। ऐसे बच्चों के लिये महाराष्ट्र सरकार या राज्य सरकार कुछ अनुदान देती हैं लेकिन ऐसे बच्चों को केवल 18 वर्ष तक की आयु तक रखने की अनुमति दी जाती है। मैं आपके माध्यम से निवेदन करूंगा कि राज्य सरकारों की मदद से जो संस्थायें काम कर रही हैं, ऐसी संस्थायें केन्द्र सरकार भी चलाये और यदि वे बच्चे 18 वर्ष की आयु के बाद भी वहीं रहना चाहें तो उन्हें रहने दो क्योंकि 18 वर्ष की आयु के बाद भी उन बच्चों की अपाहिजता समाप्त नहीं होती है। मेरा एक निवेदन यह भी है कि जिन परिवारों में ऐसे बच्चे पैदा होते हैं, उन परिवारों को बीपीएल का कार्ड दिया जाये। उन परिवारों को ऐसे बच्चों के पालन पोषण में काफी दिक्कतें आती हैं। उन बच्चों की देखभाल के लिये एक पूरा सदस्य घर में रहता है। यह एक बहुत गंभीर समस्या है। मैंने इस समस्या पर आपके माध्यम से सदन का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। मैं सरकार से विनती करूंगा कि इसे गंभीरता से लें और ऐसे परिजनों की मदद करें।

SHRI B. MAHTAB (CUTTACK): Madam, I want to associate myself with this issue. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: Do you want to associate yourself with this issue? It is all right. You please send your name to the Table.

SHRI KABIR SUMAN (JADAVPUR): Madam, I also want to associate with this issue. ...(*Interruptions*)

MADAM SPEAKER: You also please send your name to the Table.

...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया :

श्री हुक्मदेव नारायण यादव,

श्री अर्जुन राम मेघवाल,

श्री भर्तृहरि महताब,

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय,

श्री कबीर सुमन,

श्री धनंजय सिंह अपने आप को श्री हंसराज गं. अहीर जी के भाषण से संबद्ध करते हैं।